Krishna Nand B(3) III Hons (1)

Q:- Define psychological research and explain the main stages of psychological research.

मनोवैज्ञानिक शोध की व्याख्या करें या मनोवैज्ञानिक शोध की परिभाषा दें। मनोवैज्ञानिक शोध में निहित चरणों या अवस्थाओं का वर्णन करें।

Ans:—

<u>मनोवैज्ञानिक शोध के चरण या अवस्थाएं</u>

अन्य वैज्ञानिक शोधों के समान मनोवैज्ञानिक शोध भी एक लम्बी प्रक्रिया है। मनोवैज्ञानिक शोध में भी नए ज्ञान की खोज तथा प्राप्त पुराने ज्ञान की जाँच की जाती है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए निश्चित क्रम में लम्बी प्रक्रिया से गुजरना होता है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए शोधार्थी को विभिन्न निश्चित चरणों या अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है। राबिन्सन (Robinson, 1986) एवं अन्य मनोविज्ञानियों द्वारा मनोवैज्ञानिक शोध के लिए निम्नांकित चरण या अवस्थाएं निर्धारित की गई हैं—

(1) शोध समस्या (Research Problem)—

मनोवैज्ञानिक शोध की पहली अवस्था या चरण शोध विषय या समस्या का चयन निर्धारित किया जाता है। शोध समस्या प्रश्नवाचक कथन के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जिसमें चरों के बीच आपसी

Krishna Nand B.A III H.o.s (9)

संबंध की कल्पना की जाती है। शोध समस्या को करलिंगर (Kerlinger, 1966) महोदय द्वारा परिभाषित करते हुए कहा गया है कि – "समस्या एक ऐसा प्रश्नवाचक कथन होता है जिसके द्वारा यह पूछा जाता है कि दो या दो से अधिक चरों के बीच किस ढंग का संबंध होता है।"

शोध समस्या निर्माण के लिए कई स्रोतों की सहायता ली जाती है। इनमें प्रमुख हैं, संबंधित विषय की पुस्तकें, पत्रिकाएं, इस क्षेत्र में किए गए शोधों का संक्षिप्त प्रकाशित लेखों के साथ-साथ क्षेत्र के विशेषज्ञ शिक्षकों। विशेषज्ञ शिक्षकों की राय का महत्वपूर्ण स्थान होता है।

माना कि शोधार्थी समस्या-समाधान व्यवहार (Problem solving behaviour) के क्षेत्र में, अध्ययन की इच्छा रखता है, तो इस संदर्भ में अब तक हुए अध्ययनों का अध्ययन कर उसकी समीक्षा करना चाहेगा। जब उसे यह पता चलता है कि अब तक इस विषय पर किए गए शोध कार्य अपर्याप्त है तो उपयुक्त समस्या का निर्माण किया गया कि "समस्या-समाधान-व्यवहार पर अभिप्रेरणात्मक कारके के महत्व का क्या प्रभाव पड़ेगा?" या समस्या समाधान-व्यवहार पर अभिप्रेरणात्मक कारकों के प्रभाव का अध्ययन करना।

अब अध्ययन की दिशा निश्चित करने के लिए प्राक्कल्पना का निर्माण किया जाता है जैसे –

Krishna Nand B.A III Hons (3)

(a) परिचय (Introduction) —

परिचय शोध का एक महत्वपूर्ण चरण है। इसमें शोधकर्ता शोध-समस्या के विभिन्न घटकों (Components) की व्याख्या का प्रयास करते हैं। समस्या से संबंधित घटकों के प्रकार, प्रभाव आदि का उल्लेख किया जाता है। अबतक समस्या से संबंधित विषय पर प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिकों के विचारों के संक्षिप्त उल्लेख के साथ-साथ हाल तक देश क्षेत्र में हुए शोधों के सारांश का भी उचित उल्लेख किया जाता है।

प्रशंसा द्वारा समस्या समाधान व्यवहार में वृद्धि होती है।"

③

साहित्य समीक्षा (Review of Literature):—

शोध विषय के चयन अथवा शोध समस्या के निर्धारण के पश्चात् शोध समस्या से संबंधित उपलब्ध सामग्रियों का विशद अध्ययन किया जाता है। अर्थात् अध्ययन संबंधित विषय में हुए शोधों एवं उपलब्ध सिद्धान्तों का पुनरवलोकन किया जाना आवश्यक होता है। इससे अब तक हुए शोधों से अब किये जाने वाले शोध कार्य की सार्थकता का पता लगाने में बहुत मदद मिलती है। साथ ही साथ अध्ययन की दिशा निर्धारित करने में आसानी होती है और प्राक्कल्पना के निर्माण में भी पर्याप्त मदद मिलती है।

(8) (4)

प्राक्कल्पनाएँ (Hypothesis):—

साहित्य समीक्षा (Review of Literature) के पश्चात् अगला महत्वपूर्ण चरण प्राक्कल्पना निर्माण का होता है। प्राक्कल्पना निर्माण से शोध कार्य की दिशा तय होती है। परिकल्पना एक अनुमानित कथन है। परिकल्पना दो या दो से अधिक चरों के बीच एक जाँच योग्य कथन है जिसकी अनुभविक जाँच की जाती है और परिकल्पना के आधार पर की गई भविष्यवाणी की सत्यता की जाँच की जाती है, जो सत्य या

Krishna Nand B.A III Hons (5)

5

गलत कुछ भी हो सकती है।

परिकल्पना निर्माण में कुछ तथ्यों पर ध्यान देना जरूरी होता है। जैसे-

(i) परिकल्पना शोध्य समस्या से संबंधित होना आवश्यक है।

(ii) परिकल्पना को एककथन के रूप में होना चाहिए।

(iii) परिकल्पना में दो या अधिक चरों की बीच संबंधों के बारे भविष्यवाणी होनी चाहिए।

(iv) परिकल्पना की जाँच अनुभविक अध्ययनों के आधार पर होनी चाहिए

(5) विधियाँ (methods) :—

इस अवस्था या चरण में निम्नांकित बातों पर ध्यान देना आवश्यक होता है —

(i) प्रतिदर्श (sampling) :—

प्रतिदर्श चयन में अध्ययन के अनुकूल प्रतिदर्श का होना आवश्यक माना गया है जो जन संख्या का उचित प्रतिनिधित्व करने में सक्षम हो। प्रतिदर्श का आकार भी निश्चित किया जाना जरूरी होने के साथ साथ उसका आयु एवं लिंग का भी ध्यान रखना आवश्यक होता है।

(ii)